بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 30 जनवरी 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(सुलह महीने की तिथि 30, 1404 हश)

आँहज़रत ﷺ की मुहब्बते इलाही का ईमान को बढ़ाने वाला तज़्किरा (वर्णन)I

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-30.01.2026

مجلہ احمدیہ قادیان پنجاب 143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशाहुद, तअव्वुज़ और सूरह अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिनसृहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हजरत मोहम्मद मुस्तफा ﷺ के अल्लाह तआला से मुहब्बत के अनगिनत वाकियात हैं, बल्कि आप ﷺ के हर अमल और हर घटना से जाहिर है कि आपके दिल में हर वक्त मुहब्बत-ए-इलाही का एक समुंदर मौजज़न रहता था। इसका एक नज़ारा ग़ज़वा-ए-उहद में दिखाई देता है, जहां अल्लाह की मुहब्बत में आपकी तड़प का एक अजीब और निराला अन्दाज़ मिलता है।

हज़रत बरा रज़ी. रावी का कहना है कि ओहद में हमारा मुकाबला मुशरिकों से हुआ। नबी करीम ﷺ ने तीर चलाने वालों का एक दल नियुक्त फ़रमाया और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी. को उनका अमीर बनाया और नसीहत फ़रमाई कि अगर तुम देखो कि हम उन पर ग़ालिब आ गए हैं तब भी अपनी जगह से न हटना, और अगर देखो कि वे हम पर ग़ालिब आ गए हैं तब भी हमारी मदद को न आना। यानी जीत या हार दोनों सूरतों में तुमने अपनी जगह नहीं छोड़नी। रावी बयान करते हैं कि जब हमारा मुक़ाबला हुआ तो दुश्मन भाग गए, यहां तक कि मैंने मुशरिक औरतों को देखा कि वे पहाड़ों की तरफ भाग रही थीं। मुसलमानों ने कहना शुरू कर दिया कि माल-ए-ग़नीमत, माल-ए-ग़नीमत। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी. ने उन्हें रोका और कहा कि नबी ﷺ ने मुझे

नसीहत की थी कि तुम अपनी जगह से न हटना। लेकिन जब मुसलमान दर्रे (तंग रास्ता) को छोड़ कर माल-ए-ग़नीमत की तरफ आए तो अल्लाह तआला ने भी उन मुसलमानों से मुंह फेर लिया। जंग का पासा पलट गया और दुश्मनों ने दोबारा हमला कर दिया। सत्तर मुसलमान शहीद हो गए। रावी का कहना है कि इस दौरान नबी अकरम ﷺ अपने साथियों के साथ पहाड़ के दामन में पनाह लिए हुए थे कि अबू सुफियान ने ऊँचे स्थान पर चढ़ कर आवाज़ दी कि क्या तुम लोगों में मुहम्मद स. है? आप स. ने फ़रमाया: जवाब मत दो। फिर उसने कहा: तुम लोगों में इब्न अबी कुहाफ़ा है? आप स. ने फ़रमाया: जवाब मत दो। फिर उसने कहा: क्या तुम लोगों में उमर बिन खत्ताब है? जब कोई जवाब न आया तो अबू सुफ़ियान ने कहा: ये सब लोग मारे गए। अगर जिंदा हो तो जरूर जवाब देते। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने आप पर क़ाबू न रख सके और पुकार कर कहा: ऐ अल्लाह के दुश्मन! तू ने झूठ कहा। अल्लाह ने तेरे मुक़ाबले में उसे ज़िंदा रखा है जो तझे ज़लील करेगा। अबू सुफ़ियान ने नारा लगाया: हुबल का बोलबाला हो। जब उसने यह कहा तो नबी ﷺ बेताब हो गए और फरमाया: तुम इसका उत्तर दो। सहाबा ने अर्ज किया: हम क्या जवाब दें? आप स. ने फ़रमाया: कहो, अल्लाह सबसे बड़ा और सबसे महान है। अबू सुफ़ियान ने कहा: हमारे लिए उज़्ज़ा बुत है और तुम्हारे लिए कोई उज़्ज़ा नहीं। नबी ﷺ ने फ़रमाया: इसका जवाब दो। सहाबा ने पूछा: क्या कहें? आप स. ने फरमाया: कहो, अल्लाह हमारा मददगार है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: आप ﷺ अल्लाह तआला की मुहब्बत में शिर्क का शाइबा (संकेत) भी नहीं आने देते थे। हुज़ूर फ़रमाते हैं- फिर आपको यह चिंता रहती थी कि लोग क़ब्रों को पूजा की जगह न बना लें, लेकिन बदक़िस्मती से आज इसी के ख़िलाफ़ अमल हो रहा है। मुसलमान पीरों, फ़क़ीरों की क़बरों पर जाकर पूजते हैं, सजदे करते हैं।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि नबी ﷺ ने उस बीमारी में, जिसमें आपका विसाल हुआ, यानी आख़री वक़त में फ़रमाया: अल्लाह लानत करे यहूद और नसारा पर, उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिदें बना लिया। हज़रत आयशा रज़ी. का कहना है कि अगर आपने यह न फ़रमाया होता तो आप स. की क़ब्र खुली रखी जाती, मगर डर था कि उसे मस्जिद ना बना लिया जाए, इसलिए खुली जगह नहीं बनाई गई। हुज़ूर फ़र्माते हैं कि आजकल तो वहाँ की सरकार ने उसके चारों ओर पुख़्ता इंतज़ाम किया है - जालियां हैं और दीवारें हैं ताकि किसी क़िस्म का शिर्क प्रकट न हो। यह काम कम से कम उन्होंने अच्छा किया है।

हुजूर फ़रमाते हैं: अल्लाह तआला की यगानगत (एकता) के बयान में एक रिवायत आती है। हज़रत उबै बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मुशरिकों ने रसूलुल्लाह ﷺ से कहा: आप स. अपने रब का नसब (वंश) हमें बताएं। इस पर अल्लाह ताला ने यह नाज़िल फ़रमाया: **क़ुल हुवल्लाहु अहद अल्लाहुस्समद।** कि अल्लाह एक है, अल्लाह बेनियाज़ है, जिसने न कुछ जना और न

वह किसी से जना गया। जो कोई चीज़ पैदा होगी ज़रूर मरेगी और जो कोई चीज़ मरेगी उसका वारिस होगा, और अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की ज़ात ऐसी है कि न वह मरेगी और न ही उसका कोई वारिस होगा।

हुज़ूर ने फ़रमाया: हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें हुदैबिया में रात की बारिश के बाद सुबह की नमाज़ पढ़ाई। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो लोगों के तरफ़ मुड़े और फ़रमाया: क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया? लोगों ने अर्ज़ किया कि अल्लाह और उसके रसूल स. बेहतर जानते हैं। आप स. ने फरमाया: अल्लाह का कहना है कि मेरे बंदों में से कुछ ऐसे हैं जिन्होंने इस हाल में सुबह की है कि वे मुझ पर ईमान लाने वाले थे और कुछ इन्कार करने वाले थे। यानी लोगों में जिसने कहा कि हम पर अल्लाह के फ़ज़ल और उसकी रहमत से बारिश हुई, वह मुझ पर ईमान लाने वाला है; और जिसने कहा कि सितारों की वजह से बारिश हुई, वह इन्कार करने वाला है।

हज़रत महमूद बिन लबीब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: मुझे सबसे ज़्यादा तुम पर जिस चीज़ का खौफ़ है, वह शिर्क-ए-असग़र है। सहाबा ने पूछा: शिर्क-ए-असग़र क्या है? आपने फ़रमाया: रिया, यानी दिखावा। इसलिए हमें अपना जायज़ा (आत्म-मंथन) लेना चाहिए। आख़िरकार कोई भी वसीला हमारे काम नहीं आएगा। अतः रसूलुल्लाह ﷺ की इताअत ही है जिसको अल्लाह तआला ने पसंद फ़रमाया है।

हज़रत मुस्लेह मौउद रज़ी. फ़रमाते हैं कि रसूल करीम ﷺ को देखो, कैसी मअरिफ़त थी, कैसी सावधानी थी, किस तरह अल्लाह तआला के नाराज़ होने से डरे रहते थे, और बावजूद इसके कि तमाम इंसानों से अधिक आप ﷺ कामिल और हर किस्म की ख़ताओं से पाक थे, मगर बावजूद इस पवित्रता के फिर भी हर समय अल्लाह से डरते रहते थे। नेकी पर नेकी करते, आला से आला आमाल बजा लाते, एक नेकी पर दूसरी नेकी करते चले जाते हैं और कभी बुराई का सवाल ही पैदा नहीं होता था, शाइबा (संकेत) भी नहीं था, हर समय अल्लाह की इबादत में मशगूल रहते, डरते और बहुत डरते थे। इसके बावजूद अपनी तरफ़ से जितना हो सके सावधान रहते, मगर ख़ुदा तआला के जलाल को देखते तो उसकी बारगाह में अपने सब आमाल से दस्तबरदार हो जाते और इस्तगफार करते और जो अवसर मिलता तो तौबा करते। अतः मुहब्बत का यह आलम था कि हर अवसर पर ज़बाने मुबारक ज़िक्रे इलाही से तर रहती थी।

हज़रत समरा बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: चार बातें तमाम कलामों से अफ़ज़ल है, जिससे भी तू शुरू करे तुझे कुछ नुकसान नहीं। अगर इनसे शुरू करो तो सबसे अफ़ज़ल है और बड़ी बरकत वाली बातें हैं, वे क्या हैं- नम्बर एक यह है कि सुब्हानल्लाह, नम्बर दो- अल्हम्दुलिल्लाह, नम्बर तीन ला इलाहा इल्लल्लाह, नम्बर चार अल्लाहु अकबर, यानी

पाक है अल्लाह। पस इन बातों का और समय ध्यान रहे या काम करते हुए इन चीज़ों को सामने रखें तो इनमें बरकत ही बरकत है।

हजरत अबू बकर रज़ी. से रिवायत है कि जब रसूल अल्लाह ﷺ को कोई खुशी की बात पेश आती तो आप तुरंत अल्लाह का शुक्र अदा करने के लिए सजदे में गिर पड़ते।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि आप स. ने फ़रमाया: अल्लाह के ज़िक्र से कोई चीज़ नहीं जो अज़ाब से निजात दिला सके।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का बयान है कि अल्लाह की नेमातों में से एक यह है कि मुझ पर रसूलुल्लाह ﷺ का विसाल मेरे घर में, मेरी बारी के दिन, मेरे सीने और मेरी हंसली के बीच हुआ। और यह कि अल्लाह ने आपके विसाल के समय मेरे और आपके लुआब (मुंह से निकलने वाली लार) को जमा कर दिया, वह इस तरह कि अब्दुर्रहमान रज़ी. मेरे पास आये, उनके हाथ में मिसवाक थी और मैं रसूलुल्लाह स. को सहारा दिए हुए थी। मैंने देखा कि आप स. उसकी तरफ़ देख रहे हैं, और मैं जानती थी कि आप स. मिस्वाक पसंद करते हैं। मैंने अर्ज़ किया: क्या मैं इसे आपके लिए ले लूँ? आपने सिर से हाँ कहा। मैंने वह आप स. को दी तो वह आपको सख़्त लगी। मैंने अर्ज़ किया: क्या मैं इसे नर्म कर दूँ? तो आपने सिर से हाँ का संकेत किया। आपके सामने पानी का बर्तन था। आप अपने हाथ में पानी में डालते और उनको अपने चेहरे पर फेरते और फ़रमाते: **ला इलाहा इल्लल्लाह,** कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाएक़ नहीं, बेशक मौत की सख्तियाँ होती हैं। फिर आप स. ने अपना हाथ उठाया और कहने लगे “अर्रफ़ीक़ आला” यहाँ तक कि आप स. फ़ोत हो गए और आप स. का हाथ झुक गया।

हज़रत मसीह मौउद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ को ख़ुदा तआला ने आखिरी समय में इख्तियार दिया था कि दुनिया में रहना या अल्लाह के पास आना है तो आप स. ने अर्ज़ किया: ऐ मेरे रब! मैं तुम्हारे पास आना चाहता हूँ। और आखिरी समय पर जब आप स. की पाक जान रुखसत हुई, यही बात थी कि बिर्रफ़ीक़ुल आला, यानी अब मैं इस जगह रहना नहीं चाहता, मैं अपने ख़ुदा के पास जाना चाहता हूँ। **اللهم صلی علی محمدٍ وبارك وسلم انك حمیدٌ مجید۔**

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ
وَرَسُوْلُہٗ۔ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ
یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔